

written by Vaibhav Singh

अल्हड़ कविताएँ

एक अल्हड़ से लड़के की अल्हड़ सी कविताएँ....



अल्हड़ कविताएँ

एक अल्हड़ से लड़के की अल्हड़ सी
कविताएँ

वैभव सिंह

© 2025 Vaibhav Singh

All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means—electronic, mechanical, photocopying, recording, or otherwise—without the prior written permission of the author.

Content

समर्पण

लेखक की ओर से

1. एक बात अधूरी रह गई
2. एक बार मुड़कर देख लिया होता
3. ठहरना जरूरी है
4. ए मेरे दोस्त
5. बस घर जाने से डरते हैं
6. बचपन खत्म हो गया है
7. किसी मंजिल की तलाश है
8. ए वक्त थोड़ा ठहर जा
9. वो लड़की
10. मेरे होने से क्या होने वाला है
11. मैं ढूंढने चला

12. फिर मिलूँगा अपने गाँव से
13. एक शख्स
14. देखती होगी चाँद को
15. सितारों में नजर आऊँगा
16. प्यार
17. अहम किरदार
18. जिंदा लाश
19. दुश्मनी
20. नहीं सुनता
21. मेरा महान देश
22. क्या है
23. जीने से डरता हूँ मैं
24. गुनहेगार
25. बस ठीक

समर्पण

यह पुस्तक मैं अपने माता-पिता, भाई-बहनों और दोस्तों को समर्पित करता हूँ। मेरे माता-पिता के आशीर्वाद और उनके द्वारा दिए गए संस्कारों ने मुझे हमेशा सही मार्ग दिखाया। उनके प्रेम और समर्थन से ही मैं जीवन में कठिनाइयों का सामना करना पाया हूँ। मेरे भाई-बहन और दोस्त हमेशा मेरे साथ रहे हैं, जिन्होंने मुझे हमेशा आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। हालांकि अभी मुझे सफलता नहीं मिली है, लेकिन उनकी मदद और मार्गदर्शन ने मुझे कभी हार मानना नहीं सिखाया। यह पुस्तक उनके विश्वास और प्रोत्साहन को समर्पित है।

लेखक की ओर से..

यह पुस्तक मेरे दिल के सबसे कोमल
जज़्बातों की अभिव्यक्ति है।

मैं कोई बड़ा शायर या कवि नहीं हूँ,
बस कोशिश की है कि शब्दों में अपने
जज़्बातों को ढाल सकूँ।

उम्मीद है कि मेरी ये छोटी-सी
कोशिश आपके दिल को छू सकेगी।

आपका,

वैभव सिंह

(लेखक)

1. एक बात अधूरी रह गई..

एक बात थी जो कहनी थी,

अधूरी रह गई।

एक शाम जो गुजारनी थी,

अधूरी रह गई।

उसकी आँखें निहारनी थीं,

अधूरी रह गई।

उसकी बातें सुननी थीं,

अधूरी रह गई।

उसे कहना था कि पसंद हो तुम,

पर मैं कह बस यही पाया कि ,

"सुनो, तुमसे कुछ कहना है..."

मगर वो बात पूरी न हो सकी,
वो बात सिर्फ़... बात ही रही, जो अधूरी रह
गई।

2. एक बार मुड़कर देख लिया होता..

शायद मुझे तुम्हें रोकना चाहिए था,
शायद तुम्हें रुकना चाहिए था,
पर हम दोनों ही, अपनी ज़िद में आगे बढ़
गए।

मैंने सोचा, तुम समझ जाओगे,
तुमने सोचा, मैं बुला लूंगा,
मगर न तुम रुके, न मैं रोक पाया।

अब दूर खड़े, बस यही सोचते हैं,
कि काश, उस एक पल को पकड़ लिया
होता,
काश, एक बार मुड़कर देख लिया होता।

3. ठहरना जरूरी है..

इस भागते, दौड़ते सफ़र में
ठहरना जरूरी है।

ज़िंदगी के इस शोर में
थोड़ी खामोशी भी जरूरी है।
जरूरी है,
हर मंज़िल से पहले
एक लम्हा खुद से मिलना भी।

जहाँ हर कोई भाग रहा है आगे,
वहाँ पीछे मुड़कर देखना भी जरूरी है।
जरूरी है,
इस लंबी ज़िंदगी में

अपनों के साथ कुछ पल बिताना भी।

कामयाबी के इस जुनून में,

अपने होने का एहसास होना भी ज़रूरी है।

ज़रूरी है,

इस व्यस्त ज़िंदगी में

खुद को समय देना भी।

इस भागती-दौड़ती ज़िंदगी में,

ज़रूरी है,

कभी-कभी ठहरकर जीना भी।

4. ए मेरे दोस्त..

ए मेरे दोस्त,

मैं जानता हूँ तू टूट चुका है,

तू थक चुका है, इम्तिहान देते देते।

मैं जानता हूँ, क्या बीतती होगी तुझ पर,

कैसे तेरी रातें गुजरती होंगी?

पर मेरे दोस्त,

तू हौंसला बनाए रखना,

तू किस्मत से लड़ते रहना।

एक दिन आएगा, तू भी जीतेगा,

तेरे भी चर्चे हज़ार होंगे।

बस तू बढ़ते रहना, ए मेरे दोस्त,

बस तू लड़ते रहना, ए मेरे दोस्त।

5. बस घर जाने से डरते हैं..

कहा किसी ने मुझसे ये कि,

मिले वक्त तो बताना कि,

कैसे तुम जीते हो,

कैसे आँसू ग़म के पीते हो।

किसी अपने के जाने पर कैसा लगता है?

क्या मरने से डर लगता है?

या नाकामी से डरते हो,

या बदनामी से बचते हो?

मैंने बोला -

अब हम थोड़ा-थोड़ा बेफ़िक़्री से जीते हैं,

ना ग़म के आँसू पीते हैं,

हाँ, अपनों को खोने का ग़म सा है,
ना नाकामी,
ना बदनामी,
ना मर जाने से डरते हैं ,
बस घर जाने से डरते हैं,
बस घर जाने से डरते हैं।

6. बचपन खत्म हो गया है..

वो नादानियाँ, वो शैतानियाँ खत्म हो गई,
वो बेफिक्री, वो मस्ती भी कहीं खो गई।
वो मिट्टी, जिसमें गिरकर भी हँसते थे,
वो दोस्त, जो बिना मतलब के हुआ करते थे।

वो बारिश में कागज़ की कश्तियाँ चलाना,
वो छोटी-छोटी बातों पे रूठ जाना।
वो माँ का हमें मना लेना,
वो पिता का ज़िद पर खिलौने दिला देना।

वो दिन, जब सपने आसमान छूने की ज़िद करते थे,
और रातों में कहानियाँ सच लगती थीं,

अब सब सिर्फ यादों का एक हिस्सा बन
गया है...

यानी अब हम बड़े हो चुके हैं,
यानी अब बचपन खत्म हो गया है।

7. किसी मंज़िल की तलाश है..

गुम हूँ किसी खयाल में,
खामोश हूँ किसी सवाल पे।
मैं जवाब हूँ उसी सवाल का,
उस अधूरे से ख्वाब का।
अच्छे वक़्त का इंतज़ार है,
किसी मंज़िल की तलाश है,
किसी मंज़िल की तलाश है।

8. ए वक्त थोड़ा ठहर जा..

ऐ वक्त, थोड़ा ठहर जा,
मेरे अभी कुछ काम बाकी हैं।
मुझे करना है ज़िंदगी में बहुत कुछ,
अभी होना मेरा नाम बाकी है।

करने हैं माँ-बाप के अरमान पूरे,
अभी उनकी मुस्कान बाकी है।
जो सपने देखे हैं, उन्हें सच करना है,
अभी मेरे इरादों में जान बाकी है।

बहुत लड़ी हैं लड़ाइयाँ अब तक,
पर मंज़िलों का इंतज़ार बाकी है।
ऐ वक्त, थोड़ा ठहर जा,

मेरे अभी कुछ काम बाकी हैं।

9. वो लड़की..

मुझसे नज़रें चुराती है वो लड़की,
हर बार मिलने से कतराती है वो लड़की।
जब भी देखूं, तो मुस्कुरा देती है,
पर अपने जज़्बात छुपाती है वो लड़की।

हर बात पर मुकर जाती है वो लड़की,
सच्चाई से नज़रें चुराती है वो लड़की।
कहती है मोहब्बत करती हूँ तुमसे,
मगर निभाने से डर जाती है वो लड़की।

10. मेरे होने से क्या होने वाला है..

मेरे ना होने से क्या होने वाला है,

और मेरे ना होने से भी क्या होने वाला है।

उसे तब भी जाना था,

उसे अब भी जाना है।

मैं तो भटका मुसाफ़िर हूँ राह का,

मेरा तो क्या ही ठिकाना है।

और जो लोग कह रहे हैं -"कुछ कर लो,

कुछ कमा लो",

अरे! मेरा उससे भी क्या होने वाला है।

11. मैं ढूँढने चला..

मैं ढूँढने चला, मुझे मेरा मयार नहीं मिला,
मुझे दोस्त तो बहुत मिले, मगर प्यार नहीं
मिला।

सफ़र में राहगुज़र मिले, हमक़दम मिले कई,
मगर जो दिल का हमनवा हो, वो यार नहीं
मिला।

ज़ख़्म भी आए, नसीब ने बेकार नहीं किया,
पर मरहम बन सके जो, वो संसार नहीं
मिला।

हर शख़्स यहाँ मसरूफ़ था अपनी ही चाहतों
में,

मुझ पर मिटने को कोई तैयार नहीं मिला।

मुझे इश्क की रौशनी का सुरूर छूना था,
चिरागों का शहर था, मगर इक तार नहीं
मिला।

12. फिर मिलूँगा अपने गाँव से..

वक़्त मिला अगर इस व्यस्त ज़िंदगी से,
तो ज़रूर मिलूँगा मैं अपने गाँव से।

उन गलियों से जहाँ बचपन बीता था,
उन रास्तों से जो स्कूल तक जाता था।

पुरानी यादों की बाहों में लौटूँगा,
उन पेड़ों की छांव तले बैठूँगा।

खेत खिलखिलाते, वो मिट्टी की खुशबू,
फिर महसूस करूँगा वो बेपरवाह सुबह की
ठंडक।

पुराने बिछड़े दोस्तों से बातचीत करूंगा,
फिर से वही शोर, वही शरारतें करूंगा।
वक़्त मिला अगर इस व्यस्त ज़िंदगी से,
तो फिर मिलूंगा मैं अपने आप से,
तो फिर मिलूंगा मैं अपने गाँव से।

13. एक शख्स..

मुझे जो चाहिए था,
वो नहीं मिला,
यानी मुझे प्यास तो मिली,
मगर दरिया नहीं मिला।

और वो मिल रही है, लहंगा अपना,
किसी की शेरवानी से।
मेरा तो वो एक ही शख्स था इस जहां में,
मुझे तो यारों, वो भी नहीं मिला।

14. देखती होगी चाँद को..

देखता हूँ चाँद को,
तो सोचता हूँ,
शायद जब वो देखती हो चाँद को,
तब उसे मैं याद तो आता हूँगा।

उसकी यादों में, उसे सताता हूँगा,
उसकी रातों में, उसके ख्वाबों में,
उसे रुलाता हूँगा।

शायद, उसे मैं अब भी याद आता हूँगा,
जब वो देखती होगी चाँद को।

15. सितारों में नजर आऊँगा..

मैं भटकता हुआ मुसाफिर,
फिर किसी से टकराऊँगा,
तुम ढूँढने न आना मुझे,
मैं तुम्हें यँ ही किसी मोड़ पर मिल जाऊँगा।

जब मेरा कोई पता न चले,
तो देख लेना आसमान की तरफ,
मैं उन सितारों में,
तुम्हें टिमटिमाता नज़र आऊँगा।

16. प्यार..

मेरा उसको प्यार करना,
मेरा उसका इंतजार करना,
मेरा उसकी आँखों में डूबना,
मेरा उसकी बातों में घूमना,
ये अलग बात है।

उसका उसको प्यार करना,
उसका उसका इंतजार करना,
उसका उसकी आँखों में डूबना,
उसका उसकी बातों में घूमना,
ये अलग बात है।

यह बात चाहे अलग हो,
मगर इसका सार एक है,

एक को उस से प्यार है,
और उसे किसी और से।

17. अहम किरदार..

मैं उसकी कहानी का अहम,

किरदार नहीं हूँ।

मैं उसका अपना क्या,

पराया भी यार नहीं हूँ।

वो मेरा सब कुछ है,

ये वो जानता है,

लेकिन वो कहता है,

मैं उसके बराबर का यार नहीं हूँ।

18. जिंदा लाश..

मुझे देखकर आईना,
हैरान लगता है,
जो शख्स खड़ा है सामने,
वो अंजान लगता है।

और जब से गया है वो छोड़ कर,
ये चलता-फिरता इंसान,
एक जिंदा लाश लगता है।

19. दुश्मनी..

ये जो शोर है,
खाए जाता है।
मैं जिसके साथ चलूँ,
वही छोड़ जाता है।

पता नहीं क्या दुश्मनी है,
ज़िंदगी की मुझसे।
मैं जिसको चाहता हूँ,
वही दूर जाता है।

20. नहीं सुनता..

मुझे उसमें "मैं" नहीं मिलता,
उसे मुझमें "वो" नहीं मिलता।

और मैं कहता बहुत कुछ हूँ,
वो सुनता बहुत कुछ है,
मगर जो सुनाना चाहिए,
बस वो वही नहीं सुनता।

21. मेरा महान देश..

यह मेरा महान देश है,

जहाँ मुद्दे अनगिनत हैं — पर कोई बात
नहीं करता।

यहाँ लोग बहुत हैं,

पर बँटे हैं धर्म, जाति और भाषा में।

सरकार है,

पर सिर्फ़ चुनावों के समय दिखती है।

इस देश में सब कुछ है —

बस कमी है इंसानियत की,

अपनेपन की,

आज़ाद सोच की,

और एक ज़िम्मेदार नागरिक की।

यह मेरा वही देश है,
जहाँ आतंक के साये बार-बार छाए हैं,
और शायद फिर छाएंगे।
पर गलती सिर्फ आतंकियों की नहीं,
हमारी भी है।

हम ही तो बढ़ावा देते हैं नफ़रत को —
किसी को नीचा दिखाकर,
किसी के धर्म को कलंकित कर,
किसी का घर जलाकर,
किसी की बहन-बेटी की इज़ज़त उछाल कर।

यह है मेरा महान देश –

जिसे संवारने की ज़िम्मेदारी भी मेरी है...

और तुम्हारी भी।

22. क्या है..

पानी का क्या है,

बहता रहता है।

हवा का क्या है,

चलती रहती है।

नेताओं का क्या है,

बिकते रहते हैं।

सरकार का क्या है,

बदलती रहती है।

देश का क्या है,

चलता रहता है।

जनता का क्या है,

पिसती रहती है।

इंसान का क्या है,

गिरता रहता है।

ज़िंदगी का क्या है,

सिखाती रहती है।

23. जीने से डरता हूँ मैं..

जिस भी रास्ते से,

गुजरता हूँ मैं,

वहाँ फिर लौट जाने से डरता हूँ मैं।

मेरी खामोशी, मेरी तन्हाई,

गवाह हैं इस बात के,

कि मैं मौत से नहीं,

जीने से डरता हूँ मैं।

24. गुनहेगार..

कहानी मेरी थी,
किरदार और थे,
मोहब्बत मेरी थी,
हकदार और थे।

हर गुनाह का दोषी,
ठहराया गया मुझे,
वो जानते थे कि गुनहेगार और थे।

25. बस ठीक..

एक दिन करूँगा सब ठीक,
अभी तो हूँ मैं बस ठीक।
लड़ाइयाँ जारी हैं ज़िंदगी से,
अभी तो चल रही है बस ठीक।

कुछ पल चुपचाप, कुछ पल चीखते हुए,
कभी हंसते हुए, कभी आँसू बहाते हुए।
सपने अधूरे, फिर भी उम्मीदों में जी रहा हूँ,
हर दिन खुद से ही लड़ता हुआ,
मैं चल रहा हूँ बस ठीक।

धन्यवाद

आपके द्वारा इस पुस्तक को
पढ़ने और इसे अपनाने के
लिए मैं दिल से आभारी हूँ।

आशा है कि आपको यह
किताब पसंद आई होगी।

आपका आभारी,

वैभव सिंह